संस्था का संक्षिप्त परिचय

उदय प्रताप स्वायत्तशासी महाविद्यालय (यू0पी0 कालेज), नगर के पाश्चमोत्तर भाग में भोजूबीर के निकट प्रदूषण मुक्त हरी–भरी विस्तृत भूमि पर स्थित है। प्रकृति के स्वच्छन्द वातावरण में शैक्षणिक, शारीरिक और मानसिक विकास के लिए यह एक सर्वोत्तम संस्थान है। शिक्षा के विशेष उददेश्य से प्रेरित होकर बहराइच (श्रावस्ती) जिले के दानवीर भिनगा नरेश राजर्षि उदय प्रताप सिंह जूदेव (1850.1913) ने इसकी नींव 1909 ने में हिवेट क्षत्रिया हाईस्कूल के रूप में डाली। औदार्य, निर्भिकता और भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध प्रेम उनके स्वाभाविक गुण थे। विघार्थियों का शारीरिक और मानसिक विकास एक साथ हो सके इसके लिए उन्होंने पठन–पाठन और रहन–सहन की व्यवस्था के अतिरिक्त शारीरिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा आदि की ओर विशेष ध्यान दिया।

सर्वप्रथम राजर्षि जी ने दो लाख रूपये में महाराज कुर्ग का पुराना निवास भवन खरीदा जिसमें इस समय आर0एस0एम0टी0 स्थित है और लगभग पचास एकड़ भूमि क्रय की। विद्यालय के संचालन के लिए 10.50 लाख रूपये की एक स्थाई निधि कायम की और सन् 1909 में शिक्षण कार्य प्रारम्भ करवाया। 1921 में इन्टर कक्षाओं के खुलने पर कोष की अतिरिक्त वृद्धि कर स्थाई निधि को 18.50 लाख रूपये कर दिया गया। इसी वर्ष विद्यालय का नाम हिवेट क्षत्रिया हाई स्कूल बदलकर उदय प्रताप इन्टरमीडिएट कालेज रखा गया। इन्टर में कृषि और वाणिज्य की कक्षायें क्रमशः 1942 और 1945 में प्ररम्भ की गई।

जुलाई 1949 में कला और वाणिज्य की कक्षाओं के साथ उदय प्रताप डिग्री कालेज की स्थापना हुई। 1950 में विज्ञान तथा 1963 में कृषि की कक्षाओं के खुलने के साथ स्नातक स्तर की पढ़ाई की व्यवस्था पूरी कर ली गई। जुलाई 1970 में विज्ञान और कला के कुछ विषयों में स्नातकोत्तर कक्षाएं खोली गई। जुलाई 1972 में कृषि में भी स्नातकोत्तर कक्षाएं तथा अक्टूबर 1972 में बी0एड0 की कक्षाएं खोली गईं। अब स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय में हिन्दी, भूगोल, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र, प्राचीन इतिहास एवं वाणिज्य व विज्ञान संकाय में में सभी विषयों और कृषि संकाय में कृषि अर्थशास्त्र, पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान, उद्यान विज्ञान, कृषि

रसायन एवं मृदा विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर पर कम्प्यूटर एवं पर्यावरण विज्ञान में डिप्लोमा पाठ्यक्रमों–पी0जी0डी0सी0ए0 तथा पी0जी0डी0डी0ई0एस0 के शिक्षण की व्यस्था है।

यह कालेज 1949 से 1960 तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था, 1960 में गोरखपुर विश्वविद्यालय से तथा 1988 में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर से सम्बद्ध हुआ। आगामी सत्र 2009–10 से महाविद्यालय की सम्बद्धता महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ से होने की सम्भवना है। सत्र 1991–1992 से यह महाविद्यालय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यू0जी0सी0 द्वारा स्वायत्तशासी घोषित कर दिया गया तथा यू0जी0सी0 नैक द्वारा B^{++} श्रेणी प्रदत्त है।

शिक्षा के सन्दर्भ में राजर्षि के विचार

"ईश्वर ने मनुष्य को ज्ञान मानवता के कल्याण के निमित्त दिया है न कि उसका अहित करने के लिए, जो शिक्षा प्रणाली विश्व शान्ति एवं सम्पूर्ण मानव जाति की उन्नति में सहायक नहीं होती वह किसी काम की नहीं"

–25 नवम्बर 1909 को विद्यालय के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन के अवसर पर राजर्षि का सन्देश